भुवनेश दशोत्तर

ई-मेल:bhuvandashottar@gmail.com

कृतज्ञ

मैं इस पक्के इरादे से खंडवा पहुँचा था कि मोहन भैया से जरूर मिलूँगा, चाहे उनके गाँव जाना पड़े।

महात्मा गाँधी मार्ग के एक कोने पर उनका रेस्टोरेंट था।

मैं, ऑटो से उतरा।

मेरी किस्मत बुलंदी पर थी।

मोहन भैया काउंटर के पास खड़े थे।

उनके चेहरे पर उम्र के सारे निशान उभर आए थे लेकिन उनके लम्बे कद के कारण उन्हें पहचानना मुश्किल नहीं था।

मैं उनके निकट पहुँचा।

"मोहन भैया, मुझे पहचाना?"

"नहीं...।" उन्होने मुझ पर एक गहरी नज़र डाली।

"मैं आपके बचपन के दोस्त रमेश भैया का छोटा भाई सुनील।"

मैंने उनके चरण छुए।

"अरे वाह!...बरसों बाद देखा... उस समय तू दस-बारह साल का था, अब पचास साल बाद सामने आया। बैठ...बता, सब कैसे हैं...कहाँ हैं?"

"भैया कलकत्ता से रिटायर हुए थे। सभी वहीं हैं।"

"रमेश नहीं आया?...उसके क्या हाल हैं?" उनकी आँखों में स्नेहपूर्ण जिज्ञासा थी।

"दो साल हो गए...वे नहीं रहे।"

"अरे!" मोहन भैया के चेहरे पर दुख गहरा गया।

"पिछले महीने माँ भी नहीं रही।"

"ओह!"

कुछ देर हम दोनों के बीच मौन छाया रहा।

"तेरा क्या चल रहा?"

"प्रायवेट कम्पनी में था। रिटायर हो गया।"

"बढ़िया...इतनी दूर, किसी खास काम से आया?"

"आपसे मिलने...माँ ने कहा था कि आपसे जरूर मिलूँ।"

"बिल्कुल कहा होगा। वे बहुत स्नेह रखती थीं।"

"माँ ने आपके लिए मुझे एक काम सौंपा था ।"

"बताओ, जरूर करुँगा।"

"आपको कुछ नहीं करना है। जो माँ ने कहा है, वह स्वीकार करना है। मना नहीं कीजिएगा।"

"बिल्कुल नहीं करुँगा।"

मैंने हिम्मत जुटाते हुए कहा, "आप तो भूल ही गए होंगे, पर माँ को याद रहा। जब बड़े भैया कॉलेज में थे, उस समय की बात है।"

"कौन-सी बात?"

"आप याद कीजिए। भैया का कॉलेज का अंतिम साल था। परीक्षा फीस भरना थी। माँ के पास पैसे नहीं थे और फिर आपने मदद की थी। लेकिन उन्होंने यह बात भैया को नहीं बताई थी।"

"हाँ, याद आया। मैंने भी उसे नहीं बताया था, तो उससे अभी क्या?"

"माँ ने अपने अंतिम दिनों में कहा कि आपको वह रुपए लौटाना है। वे आपसे नहीं मिल सकी थीं। आप गाँव चले गए थे और भैया की नौकरी लगते ही हम सब कलकत्ता।" मुझे लगा कि मैंने माँ की तरफ से सारी सफाई दे दी थी।

"तो तुम इतनी दूर से केवल इसलिए आए? "

"हाँ, उन्होंने मुझे भी यह बात अपने अंतिम दिनों में बताई। आपकी मदद ने ही भैया को डिग्री दिलाई और उनकी नौकरी लगी। वे यह बात बार -बार मुझे कहती रहीं।"

"नहीं, ऐसा कुछ नहीं है। रमेश ने अपनी मेहनत से डिग्री हासिल की थी। मुझे तो उन रुपयों का कभी ख्याल भी नहीं आया।"

"भैया ... इस समय उस राशि कोई महत्व नहीं है लेकिन उस समय माँ के लिए बहुत थी।"

"समय -समय की बात है। अच्छा-बुरा समय आता-जाता रहता है।" कहते हुए मोहन भैया की आँखें कहीं अतीत में गुम हो गईं।

मैंने पर्स से बीस रुपए निकाले।

"भैया, लीजिए... रख लीजिए।"

वे चौंककर, अतीत से लौट आए।

"ऐसा मत कर। क्यों पाप में डाल रहा है!"

"नहीं भैया, आपने जो मदद की थी वह अनमोल है। माँ की सारे आशीर्वाद आपके साथ हैं। आप इन रुपयों को रख लीजिए... माँ जहाँ होंगी उन्हें अच्छा लगेगा।"

"ठीक है, माँ की बात मान लेता हूँ लेकिन मैंने भी वो रुपए बाबूजी से लिए थे। उन्होंने मुझे यह बात बताने से मना किया था।" यह कह, वे खड़े हो गए।

उन्होंने रुपयों को मस्तक से लगाया और बाबूजी की तस्वीर के पास रख दिए।

मैं उनके पास खड़ा हो गया।

मैं नतमस्तक, कृतज्ञता से भीगता चला जा रहा था।

मज़ा

"परसों तुम्हारा जन्मदिन है, कहाँ चलें?"

"तुम बताओ।"

"हमेशा की तरह कहीं रिसोर्ट में चलें?"

"हाँ, बबलू को भी अब ज्यादा मजा आएगा। नौ साल का हो गया है, थोड़ी स्विमिंग भी सिखा देंगे।"

"बढ़िया रहेगा।"

"ऑनलाइन देखता हूँ।"

पढ़ाई करते बबलू ने गर्दन घुमाई, "पापा...मुझे रिसोर्ट नहीं जाना।"

"क्यों?"

"मुझे दादा-दादी जी के पास जाना है।"

"वहाँ गाँव में क्या रखा है, मजा तो रिसोर्ट में आएगा।"

"नहीं आएगा...आप मेरा जन्मदिन मेरे साथ मनाते हो ना!"

"तो?

"तो फिर आपको भी तो दादा-दादी के साथ मनाना चाहिए ना! हर साल ऐसे ही गाँव है, गाँव है, कहकर टाल देते हो।"

रिसोर्ट तलाश करती उँगलियाँ थम गईं।